- सूखी हुई सामग्री को हवा बंद बक्सों में भंडारित किया जाता है।

पैदावार

- क) 1800 मीटर की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में प्रतिहेक्टयर 3.70 से 6.60 मी0 टन की पैदावार होती है।
  ख) 2200 मीटर की ऊँचाई वाले क्षेत्र में प्रतिहेक्टयर 6.50 से 10.8 मी0 टन की पैदावार होती है।

रेवांड चीनी की खेती

सामान्य नाम	:	रेवांड चीनी
वानस्पतिक नाम	:	रिह्यूम इमोडी
कुल	:	पोलीगोनीयेसी
उपयोगी भाग	:	जड़ और प्रकंद
सामान्य उपयोग	:	यह पौधा हल्का, कसैला, भूखवर्घक होता है इसकी जड़े एन्टिऑक्सीडेन्ट तथा एन्टिडायबेटिक होती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास एसके विश्वविद्यालय एग्रीकलचरल साईस एण्ड टेक्नोलॉजी, श्रीनगर, जम्मू–कश्मीर तथा हाई एलटीट्यूड प्लांट फिज़ियोलॉजी रिसर्च सेंटर, एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तराखण्ड के द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

रेवांड चीनी

रह्यूम इमोडी

कुलः पोलीगोनीयेसी

- रेवांड चीनी एक बारहमासी 1 से 1.5 मीटर लम्बा पौधा होता है।
- पत्तियाँ अंडाकार, लम्बी और चमकदार होती हैं।
- जड़ें मोटी और लम्बी होती हैं।

जलवायु एवं मिट्टी

- इस पौधे का हिमालय के एल्पाइन क्षेत्रों में 2800–3800 मीटर(समुद्र तल से) के बीच अच्छा विकास होता है।
- इस पौधे की खेती के लिए सूखी तथा छिद्रित मिट्टी उपयुक्त होती है।

उगाने की सामग्रीः

- बीज तथा प्रकन्द का ऊपरी भाग।
- सितम्बर–अक्टूबर में बीजों को एकत्रित किया जा सकता है।

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करनाः

- 15 सेमी की दूरी पर मार्च और अप्रैल में बीजों को खुले स्थानों पर प्रत्यारोपित किया जाता है।
- बीज से पौध लगभग एक महीने में पूर्ण हो जाती है।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- लगभग 600 ग्राम बीज एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए आवश्यक होता है।
- बीजों के लिए कोई विशिष्ट पूर्वभिक्रिया की आवश्यकता नहीं होती है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- भूमि को जोतकर अच्छी तरह से समतल किया जाता है।
- 10 मी0 टन की दर से जंगली घास/एफवाईएम को एक हेक्टयर भूमि में मिलाया जाता है।

पौधारोपण और अनुकूलतम दूरीः

- मई के महीने में तीन माह पुरानी पौध को 50 सेमी X 50 सेमी की दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है।
- एक हेक्टेयर भूमि में 40,000 पौधों को प्रत्यारोपित किया जा सकता है।

अंतर फसल प्रणालीः

- द्वितीय वर्ष के बाद किसी अन्य फसल को इसके साथ नहीं उगाया जा सकता है।
- एकवर्षीय सब्जी वाली फसलों को प्रथम वर्ष में इस पौधे के साथ उगाया जा सकता है।

संवर्धन और रख–रखाव विधिः

सिंचाईः

- पौध को प्रत्यारोपण के तुरन्त बाद सिंचाई करना आवश्यक होता है।
- गर्मियों के मौसम में चार सप्ताह के अंतराल में सिंचाई की जाती है।

निराईः

- वर्षा ऋतु के दौरान में 15–30 दिनों के अंतराल में निराई करना आवश्यक होता है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाईः

- पौध से तैयार की गई फसल को पकने में लगभग 4–5 साल लगते हैं जबकि प्रकंदों से फसल उगाने में 2–3 वर्ष का समय लगता है।
- एक वर्ष के बाद मई–जून में फूल आ जाते हैं और फल सितम्बर–अक्टूबर में आ जाते हैं।
- पौधा चार ऋतुओं के बाद सितम्बर व अक्टूबर में परिपक्व हो जाता है।

खेती पश्चात् प्रबन्धनः

- जड़ और प्रकन्द को अच्छी तरह से धोकर, छोटे–छोटे टुकड़े करके छायादार स्थान पर सुखाया जाता है।